

अहो श्रीजैनसद्धर्म-प्रभावोभुवनोत्तमः। क्व व्याघ्री पापकर्मासौ क्व स्वर्गे सारसंभवः ॥४१॥
ततः श्रीजैनसद्धर्मो स्वर्गमोक्षसुखप्रदः। आराध्यो भक्तितो नित्यं भव्यैः स्वात्मप्रसिद्धये ॥४२॥
सिद्धश्रीमूलसंघाख्ये प्रोक्तुंगोदयभूधरे। भानुर्भट्टारकः स्वामी जीयान्मे मल्लिभूषणः ॥४३॥
प्रोद्यत्सम्यक्त्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरङ्गैः निर्द्वैतैकान्तमिथ्यामतमलनिकरः क्रोधनक्रादिदूरः।
श्रीमज्जैनेन्द्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजिनेन्द्रप्रवृद्धो। जीयान्मे सूरिवर्यो व्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः ॥४४॥

इति कथाकोशे भट्टारकश्रीमल्लिभूषणशिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते

श्रीसुकौशलश्रेष्ठिनः कथा समाप्ता।

५९. गजकुमारमुनेः कथा

प्रसिद्धं स्वगुणैः सिद्धं पूजार्थं जिननायकम्। नत्वा गजकुमारस्य कथयामि कथानकम् ॥१॥
श्रीमद्भट्टारवतीपुर्यां प्रसिद्धायां जगत्त्रये। श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य पवित्रायां सुजन्मना ॥२॥

सौधर्मस्वर्ग में देव हुई। सच है-जीवों की शक्ति अद्भुत ही हुआ करती है और जैनधर्म का प्रभाव भी संसार में बड़ा ही उत्तम है। नहीं तो कहाँ तो पापिनी व्याघ्री और कहाँ उसे स्वर्ग की प्राप्ति इसलिए जो आत्मसिद्धि ने चाहने वाले हैं, उन भव्य जनों को स्वर्ग-मोक्ष को देने वाले पवित्र जैनधर्म का पालन करना चाहिए ॥३७-४२॥

श्री मूलसंघरूपी अत्यन्त ऊँचे उदयाचल से उदय होने वाले मेरे गुरु श्रीमल्लिभूषणरूपी सूर्य संसार में सदा प्रकाश करते रहें ॥४३॥

वे प्रभाचन्द्राचार्य विजयलाभ करें जो ज्ञान के समुद्र हैं। देखिए, समुद्र में रत्न होते हैं, आचार्य महाराज सम्यग्दर्शन रूपी श्रेष्ठ रत्न को धारण किए हैं। समुद्र में तरंगें होती हैं, ये भी सप्तभंगी रूपी तरंगों से युक्त हैं, स्याद्वाद विद्या के बड़े ही विद्वान् हैं। समुद्र की तरंगें जैसे कूड़ा-करकट निकाल बाहर फेंक देती हैं, इसी तरह ये अपनी सप्तभंगवाणी द्वारा एकान्त मिथ्यात्वरूपी कूड़े-करकट को हटा दूर करते थे, अन्य मतों के बड़े-बड़े विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर विजयलाभ करते थे। समुद्र में मगरमच्छ घड़ियाल आदि अनेक भयानक जीव होते हैं, पर प्रभाचन्द्ररूपी समुद्र में उससे यह विशेषता थी, अपूर्वता थी कि उसमें क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि भयानक मगरमच्छ न थे। समुद्र में अमृत रहता है और इनमें जिनेन्द्र भगवान् का वचनमयी निर्मल अमृत समाया हुआ था और समुद्र में अनेक तरह की बिकने योग्य वस्तुएँ रहती हैं ये भी व्रतों द्वारा उत्पन्न होने वाली पुण्यरूपी विक्रेय-वस्तु को धारण किए थे ॥४४॥

५९. गजकुमार मुनि की कथा

जिन्होंने अपने गुणों से संसार में प्रसिद्ध हुए और सब कामों को करके सिद्धि, कृत्यकृत्यता लाभ की है, उन जिन भगवान् को नमस्कार कर गजकुमार मुनि की कथा लिखी जाती है ॥१॥

वासुदेवोभवद्राजा त्रिखण्डेशो महाबलिः। तस्य गन्धर्वसेनायां राज्ञ्यां गजकुमारवाक् ॥३॥
 पूत्रोभूद्भटकोटीनां मध्येसौ सुभटाग्रणीः। यत्प्रतापेन शत्रूणां दग्धा मानलता तता ॥४॥
 पोदनादिपुरे राजा तथाभूदपराजितः। स च श्रीवासुदेवस्य नैव सिद्ध्यति दुष्टधीः ॥५॥
 ततः श्रीवासुदेवेन घोषणा दापिता पुरे। योपराजितभूपालं समानयति विद्विषम् ॥६॥
 तस्मै ददामि सत्प्रीत्या वाञ्छितं वरमुत्तमम्। श्रीमान् गजकुमारोसौ तत्समाकर्ण्य वेगतः ॥७॥
 पितुः पादद्वयं नत्वा गत्वा तत्पोदनं पुरम्। युद्धेऽपराजितं जित्वा गृहीत्वा जीवितं द्रुतम् ॥८॥
 समानीय त्रिखण्डोरु-स्वामिनस्तं समर्पयत्। दुःसाध्यं साध्यते केन सद्भटेन विना क्षितौ ॥९॥
 वरं प्राप्य कुमारोसौ कामचारं सुलम्पटः। हठाद्द्वारवतीस्त्रीणां समूहं सेवते स्म च ॥१०॥
 धिग्धिक्कामं दुराचारं महापापस्य कारणम्। यतो लज्जाभयं नैव कामिनां मुग्धचेतसाम् ॥११॥
 श्रेष्ठिनः पांसुलस्यापि सुरत्याख्यास्ति कामिनी। प्रोल्लसद्रूपसंयुक्ता तस्यां सोपि रतोभवत् ॥१२॥

नेमिनाथ भगवान् के जन्म से पवित्र हुई प्रसिद्ध द्वारका के अर्धचक्री वासुदेव की रानी गन्धर्वसेना से गजकुमार का जन्म हुआ था। गजकुमार बड़ा वीर था। उसके प्रताप को सुनकर ही शत्रुओं की विस्तृत मानरूपी बेल भस्म हो जाती थी ॥२-३॥

पोदनपुर के राजा अपराजित ने तब बड़ा सिर उठा रखा था। वासुदेव ने उसे अपने काबू में लाने के लिए अनेक यत्न किए, पर वह किसी तरह इनके हाथ न पड़ा। तब इन्होंने शहर में यह डौंडी पिटवाई कि जो मेरे शत्रु अपराजित को पकड़ लाकर मेरे सामने उपस्थित करेगा, उसे उसका, मन चाहा वर मिलेगा। गजकुमार डौंडी सुनकर पिता के पास गया और हाथ जोड़कर उसने स्वयं अपराजित पर चढ़ाई करने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना मंजूर हुई वह सेना लेकर अपराजित पर जा चढ़ा। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। अन्त में विजयलक्ष्मी ने गजकुमार का साथ दिया। अपराजित को पकड़ लाकर उसने पिता के सामने उपस्थित कर दिया। गजकुमार की इस वीरता को देखकर वासुदेव बहुत खुश हुए उन्होंने उसकी इच्छानुसार वर देकर उसे संतुष्ट किया ॥४-९॥

ऐसे बहुत कम अच्छे पुरुष निकलते हैं जो मनचाहा वर लाभकर सदाचारी और सन्तोषी बने रहें। परन्तु गजकुमार की उल्टी दशा हुई उसने मनचाहा वर पिताजी से लाभ कर अन्याय की ओर कदम बढ़ाया। वह पापी जबरदस्ती अच्छे-अच्छे घरों की सती स्त्रियों की इज्जत लेने लगा। वह ठहरा राजकुमार, उसे कौन रोक सकता था और जो रोकने की कुछ हिम्मत करता तो वह उसकी आँखों को काँटा खटकने लगता और फिर गजकुमार उसे जड़मूल से उखाड़कर फेंकने का यत्न करता। उस काम को, उस दुर्गचार को धिक्कार है, जिसके वश हो मूर्ख-जनों को लज्जा और भय भी नहीं रहता है ॥१०-११॥

इसी तरह गजकुमार ने अनेक अच्छी-अच्छी कुलीन स्त्रियों की इज्जत ले डाली। पर इसके

अन्तः पांसुलकश्चापि प्रज्वलन्कोपवह्निना। गृहे संतिष्ठते कष्टमक्षमस्तन्निवारणे ॥१३॥
 एकदा केवलज्ञान-प्रकाशितजगत्त्रयः। श्रीमन्नेमिजिनः स्वामी सुरेन्द्राद्यैः प्रसेवितः ॥१४॥
 भव्यपुण्योदयेनोच्चैर्द्वारवत्यां समागतः। तत्र श्रीबलभद्रेण वासुदेवान्वितेन च ॥१५॥
 अन्यैर्भूपादिभिः सर्वैः परमानन्दनिर्भरैः। तस्य श्रीजिननाथस्य पादपद्मद्वयं मुदा ॥१६॥
 समभ्यर्च्य बलाद्यैश्च स्वर्गमोक्षसुखप्रदम्। स्तुत्वा नत्वा महाभक्त्या भावितं चेतसि स्थिरम् ॥१७॥
 पुनस्ते धर्ममाकर्ण्य शर्मकोटिविधायकम्। मुनिश्रावकभेदाभ्यां श्रीमन्नेमिजिनोदितम् ॥१८॥
 सन्तुष्टा मानसे गाढं स्तुतिं चक्रुर्जिनेशिनाम्। श्रुत्वा धर्मं जिनेन्द्राणां कस्यानन्दो न जायते ॥१९॥
 तथा धर्मं समाकर्ण्य भक्त्या गजकुमारवाक्। त्रिधा वैराग्यमासाद्य कृत्वा निन्दां स्वकर्मणः ॥२०॥
 दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं भवभ्रमणनाशिनीम्। विहृत्योच्चैर्महीपीठं प्रान्तेऽसौ सत्तपोनिधिः ॥२१॥
 ऊर्जयन्तमहोद्याने प्रायोपमरणे दृढः। संन्यासेन स्थितः स्वामी निश्चलो मेरुवत्तराम् ॥२२॥
 तं तत्रस्थं कुधीर्ज्ञात्वा पांसुलो वैरतो द्रुतम्। गत्वा तत्र महाकोपात्तं संप्राप्य यतीश्वरम् ॥२३॥
 सर्वतो लोहकीलैश्च कीलित्वा च प्रसन्धिषुः। नष्टः पापी समादाय भूरि पापस्य संचयम् ॥२४॥

दबदबे से किसी ने चूँ तक न किया। एक दिन पांसुल सेठ की सुरति नाम की स्त्री पर इसकी नजर पड़ी और उसने उसे खराब भी कर दिया। यह देख पांसुल का हृदय क्रोधाग्नि से जलने लगा। पर वह बेचारा उसका कुछ कर नहीं सकता था। इसलिए उसे भी चुपचाप घर में बैठा रह जाना पड़ा ॥१२-१३॥

एक दिन भगवान् नेमिनाथ भव्य-जनों के पुण्योदय से द्वारका में आए बलभद्र, वासुदेव तथा और बहुत से राजा-महाराजा बड़े आनन्द के साथ भगवान् की पूजा करने को गए। खूब भक्तिभावों से उन्होंने स्वर्ग-मोक्ष का सुख देने वाले भगवान् की पूजा-स्तुति की, उनका ध्यान-स्मरण किया। बाद में मुनि और गृहस्थ धर्म का भगवान् के द्वारा उन्होंने उपदेश सुना, जो कि अनेक सुखों का देने वाला है। उपदेश सुनकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बार-बार भगवान् की स्तुति की। सच है, साक्षात् सर्वज्ञ भगवान् का दिया सर्वोपदेश सुनकर किसे आनन्द या खुशी न होगी। भगवान् के उपदेश का गजकुमार के हृदय पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा। वह अपने किए पापकर्मों पर बहुत पछताया। संसार से उसे बड़ी घृणा हुई। उसने उसी समय भगवान् के पास ही दीक्षा ले ली, जो संसार के भटकने को मिटाने वाली है। दीक्षा लेकर गजकुमार मुनि विहार कर गए। अनेक देशों और नगरों में विहार करते और भव्य-जनों को धर्मोपदेश द्वारा शान्तिलाभ कराते। अन्त में वे गिरनार पर्वत के जंगल में आए। उन्हें अपनी आयु बहुत थोड़ी जान पड़ी। इसलिए वे प्रायोपगमन संन्यास लेकर आत्म-चिंतन करने लगे। तब उनकी ध्यान-मुद्रा बड़ी निश्चल और देखने योग्य थी ॥१४-२२॥

उनके संन्यास का हाल पांसुल सेठ को जान पड़ा, जिसकी स्त्री को गजकुमार ने अपने दुराचारीपने की दशा में खराब किया था। सेठ को अपना बदला चुकाने को बड़ा अच्छा मौका हाथ लग गया। वह क्रोध से भरता हुआ गजकुमार मुनि के पास पहुँचा और उनके सब सन्धिस्थानों में

तदा गजकुमारोसौ मुनीन्द्रो जिनतत्त्ववित्। तां वेदनां सुधीश्चित्ते गणयंश्च तृणोपमाम् ॥२५॥
 कृत्वा समाधिना कालं स्वर्गलोकं ययौ द्रुतम्। तत्र सौख्यं चिरंकालं भुञ्जानः सुखतः स्थितः ॥२६॥
 अहो सतां महाचित्रं चारित्रं भुवनोत्तमम्। क्व वेदनाभवद्भूरिः क्व समाधिः प्रशर्मदः ॥२७॥

सकलभुवननाथश्रीजिनेन्द्रप्रणीतं विमलमुखनिवासं जैनधर्मं निशम्य।

विशदतरमतीशः संयमी योऽत्र जातो भवतु गजकुमारः शान्तयेऽसौ मुनीन्द्रः ॥२८॥

इति कथाकोशे गजकुमारमुनेः कथा समाप्ता।

६०. पणिकमुनेः कथा

श्रीजिनं शर्मदं नत्वा शान्तये सद्भिरर्चितम्। वक्ष्ये श्रीपणिकाख्यां संक्षेपेण जगद्धितम् ॥१॥
 पुरे पणीश्वरे रम्ये प्रजापालो महीपतिः। श्रेष्ठी सागरदत्ताख्यः पणिका श्रेष्ठिनी प्रिया ॥२॥
 तयोः पुत्रः पवित्रात्मा संजातः पणिकाभिधः। सुधीः सन्मार्गसंसक्तो विरक्तः पापकर्मणि ॥३॥
 एकदा पणिको धीमान्बद्धमानजिनेशिनः। समवादिसृतिं प्राप्य प्रोल्लसद्रत्नतोरणाम् ॥४॥

लोहे के बड़े-बड़े कीले ठोककर चलता बना। गजकुमार मुनि पर उपद्रव तो बड़ा ही दुःसह हुआ, पर वे जैनतत्त्व के अच्छे अभ्यासी थे, अनुभवी थे, इसलिए उन्होंने इस घोर कष्ट को एक तिनके के चुभने की बराबर भी न गिन बड़ी शान्ति और धीरता के साथ शरीर छोड़ा। यहाँ से ये स्वर्ग में गए। वहाँ अब चिरकाल तक वे सुख भोगेंगे। अहा! महापुरुषों का चरित बड़ा ही अचंभा पैदा करने वाला होता है। देखिये, कहाँ तो गजकुमार मुनि का ऐसा दुःसह कष्ट और कहाँ सुख देने वाली पुण्य-समाधि! इसका कारण सच्चा तत्त्वज्ञान है। इसलिए इस महत्ता को प्राप्त करने के लिए तत्त्वज्ञान का अभ्यास करना सबके लिए आवश्यक है ॥२३-२७॥

सारे संसार के प्रभु कहलाने वाले जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा सुख के कारण धर्म का उपदेश सुनकर जो गजकुमार अपनी दुर्बुद्धि को छोड़कर पवित्र बुद्धि के धारक और बड़े भारी सहनशील योगी हो गए, वे हमें भी सुबुद्धि और शान्ति प्रदान करें, जिससे हम भी कर्तव्य के लिए कष्ट सहने में समर्थ हो सकें ॥२८॥

६०. पणिक मुनि की कथा

सुख के देने वाले और सत्पुरुषों से पूजा किए गए जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर श्री पणिक नाम के मुनि की कथा लिखी जाती है, जो सबका हित करने वाली है ॥१॥

पणीश्वर नामक शहर के राजा प्रजापाल के समय वहाँ सागरदत्त नाम का एक सेठ हो चुका है। उसकी स्त्री का नाम पणिका था। उसका एक लड़का था। उसका नाम पणिक था। पणिक सरल, शान्त और पवित्र हृदय का था। पाप कभी उसे छू भी न गया था। सदा अच्छे रास्ते पर चलना उसका कर्तव्य था। एक दिन वह भगवान् के समवसरण में गया, जो कि रत्नों के तोरणों से बड़ी